बिदअत
और
बिदआती
http://salfibooks.blogspot.com

बिदअ़त और बिदअ़ती

मुहम्मद साईद, टोंक

बिदअ़त का मअ़नी :

लुग़त (डिक्शनरी) में बिदअ़त का मतलब कोई चीज़ ईजाद करना या नये सिरे से बनाना होता है और शरई इस्तेलाह में 'बिदअ़त' सवाब हासिल करने की ग़रज़ से दीन में किसी ऐसी चीज़ (बात) का बढ़ाना है जिसकी बुनियाद असल सुन्नत में मौजूद न हो। यानी हर वह चीज़ जिसको दीन में अल्लाह का तक़र्रुब हासिल करने के लिए ईजाद किया गया हो और उसकी सेहत पर कोई दलील न अल्लाह की किताब से हो, न सुन्नत रसूल (ﷺ) से और न ही सहाबा किराम (रज़ि.) ने उस काम को किया हो, बिदअ़त कहलाती है।

01. हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया- जिसने मेरे दीन में कोई चीज़ ईजाद की जो उसमें से नहीं है तो वह चीज़ मरदूद (रद्द) है। (बुख़ारी : 2697, मुस्लिम)

02. हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया- जिसने कोई ऐसा काम (अ़मल) (दीन में) किया जिसके करने का मैंने हुक्म नहीं दिया तो वह काम मरदूद (रद्द) है। (मुस्लिम)

बिदअ़त की बुराई :

01. हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया- बेहतरीन बात अल्लाह की किताब है और बेहतरीन हिदायत मुहम्मद (ﷺ) की हिदायत है और बदतरीन काम दीन में नई बात ईजाद करना है और नई चीज़ बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही है। (मुस्लिम : 1471, इब्नेमाजा : 045) और हर गुमराही आग में ले जाने वाली है। (नसई : 1581)

02. हज़रत अ़ली (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया- अल्लाह ने लअ़नत की है उस शख़्स पर जो ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवर ज़िब्ह करे, जो ज़मीन की हदें तब्दील करे, जो अपने वालिद पर लअ़नत करे और जो बिदअ़ती को पनाह दे। (मुस्लिम)

03. अनस इब्ने मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया- अल्लाह तआ़ला बिदअ़ती की तौबा कुबूल नहीं करता जब तक कि वह बिदअ़त को छोड़ न दे। (तबरानी-तरग़ीब व तरहीब अल्बानी : 052)

04. अ़ब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया- अल्लाह तआ़ला बिदअ़ती का कोई अ़मल कुबूल नहीं करता, यहां तक कि वह अपनी बिदअ़त छोड़ दें और तौबा कर ले। (इब्ने माजा :50 (Da'if))

05. हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

फ़र्माया- मै हौजे-कौसर पर तुम्हारा मेजबान होऊंगा। जो वहा आयेगा, पानी पियेगा और जिसने एक बार पी लिया उसे कभी प्यास नहीं लगेगी। कुछ लोग ऐसे भी आयेंगे जिन्हें मैं पहचानूंगा और वह भी मुझे पहचानेंगे कि मैं उनका रसूल हूँ। फिर उन्हें मुझ तक आने से रोक दिया जायेगा। मैं कहूंगा यह तो मेरे उम्मती है लेकिन मुझे बतलाया जायेगा कि मुहम्मद (ﷺ) आप नहीं जानते कि आपके बाद इन लोगों ने कैसी-कैसी बिदअते जारी की है। फिर मैं कहूंगा- दूरी हो, दूरी हो ऐसे लोगो के लिये जिन्होंने मेरे बाद दीन को बदल डाला। (बुख़ारी : 6584, 7051, मुस्लिम)

06. हज़रत आसिम (रज़ि.) ने कहा कि मैने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा- क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना को 'हरम' क़रार दिया है? उन्होंने कहा- हाँ। फ़लां जगह से फ़लां जगह तक कोई पेड़ न काटा जाये न कोई बिदअत जारी की जाये। इसके अलावा नबी (ﷺ) ने फ़र्माया- जो शख़्स यहां कोई बिदअत जारी करे, उस पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और सारे लोगों की लअनत है। (मुस्लिम , बुख़ारी : 1867/7306)

07. जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया- 'जिसने मेरी सुन्नत से कोई एक सुन्नत जिन्दा की और लोगों ने उस पर अमल किया तो सुन्नत जिन्दा करने वालों को भी उतना ही सवाब मिलेगा जितना उस सुन्नत पर अमल करने वाले तमाम लोगों को मिलेगा जबकि लोगों के अपने सवाब में से कोई कमी नहीं की जायेगी और जिसने कोई बिदअत जारी की और फिर उस पर लोगों ने अमल किया तो बिदअत जारी करने वाले पर उन तमाम लोगों का गुनाह होगा जो उस बिदअत पर अमल करेंगे जबकि बिदअत पर अमल करने वाले लोगों के अपने गुनाहों की सज़ा से कोई चीज़ कम नहीं होगी।' (इब्ने माजा : 203, मुस्लिम , तिर्मिजी : 2460)

08. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया- जिस शख़्स ने लोगों

को हिदायत की दअवत दी उसे उस हिदायत पर अमल करने वाले तमाम लोगों के बराबर सवाब मिलेगा और हिदायत पर अमल करने वालों का अज्र (सवाब) भी कम नहीं होगा। इसी तरह जिस शख़्स ने लोगों को गुमराही (बिदअत) की तरफ़ बुलाया उस शख़्स पर उन तमाम लोगों का गुनाह होगा जो उस गुमराही पर अमल करेंगे जबकि गुनाह करने वालों के अपने गुनाहों में से कोई कमी नहीं की जायेगी। (Jami' at-Tirmidhi 2674)

09. सुफ़यान बिन सीरीन (रह.) कहते हैं कि शुरू-शुरू में लोग हदीस की सनद के बारे में सवाल नहीं करते थे लेकिन जब फ़ित्ना (बिदआत और मनघड़त रिवायत) का फ़ैलना शुरू हुआ तो लोगों ने हदीस की सनद पूछना शुरू कर दी। (और यह उसूल भी बना लिया) कि देखा जाये कि अगर हदीस बयान करने वाले अहले सुन्नत है तो उनकी हदीस क़ुबूल की जायेगी अगर अहले-बिदअत है तो उनकी हदीस क़ुबूल नहीं की जायेगी। (मुस्लिम-मुक़दमा-बाब-बयानुल असानीद पेज 33)

बिदअत की ख़ुदसाख़्ता तक़्सीम :

बिदअत को पसन्द करने वालों ने अपने ग़ैर मसनून और बिदअती कामों (बातों) को दीन की सनद दिलाने के लिये बिदअत को बिदअते हस्ना और बिदअते सय्या में बांट रखा है। हालांकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तमाम बिदआत को गुमराही क़रार दिया है (हर बिदअत गुमराही है) (मुस्लिम , इब्ने माजा-045)

हक़ीक़त यह है कि बिदअते हस्ना के चोर दरवाज़े ने दीन (इस्लाम) में बिदअत को फ़ैलाने और रिवाज देने में सबसे अहम रोल (किरदार) अदा किया है। मसनून इबादतों के मुक़ाबले में ग़ैर मसनून और मनघड़त इबादात ने जगह लेकर एक बिल्कुल नये दीन की इमारत खड़ी कर दी।

प्रोफ़ेसर अशफ़ाक़ ज़फ़र लाधी लिखते है कि :

फ़ातिहा शरीफ़, कुल शरीफ़, दसवां शरीफ़ चालीसवां शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़, उर्स शरीफ़, मीलाद शरीफ़, नियाज़ शरीफ़, चिल्लाकशी, कशफुल कुबूर, चिरागां, चढ़ावा, कूण्डे, झण्डे, कव्वाली, दुआ, गंजुलअर्श, दुरूदे ताज़, दुरूदे नारिया, दुरूदे

माही, दुरूदे तन्जीना, दुरूदे अक्बर, खत्म ख़्वाजगान, क़ुर्आन ख़्वानी ज़िक्र के हल्के और महफ़िले वग़ैरह-वग़ैरह जैसे ग़ैर मसनून, बिदई अफ़्वाल को इबादत का दर्जा देकर तिलावते, क़ुर्आन, रोज़ा, नमाज़, हज्ज, ज़कात, तस्बीह व तहलील और ज़िक्रे इलाही जैसी इबादतों को सिरे से ताक पर रख दिया गया और अगर कहीं इन इबादत का तसव्वुर बाक़ी रह भी गया है तो बिदआत के ज़रिये उनकी हक़ीक़ी शक्ल व सूरत बिगाड़ दी गई।

आप इस हक़ीक़त को भी जान लें कि बिदअतियों ने अपने ज्यादातर अक़ाइद और अमाल की बुनियाद जईफ़ और मौज़ूअ (मनघड़त) रिवायात पर रखी है और वह भी अक्सर बिदआत शिर्किया अक़ाइद और नज़रियात पर मबनी है। यही वजह है कि बिदआत व शिर्क का आपस में चोली दामन का साथ है। (मक़ामे हदीस और असली अहले सुन्नत : 358-59)

01. नाफ़ेअ (रह.) से रिवायत है कि एक आदमी ने अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि.) के पास छींक मारी और कहा- 'अल्हम्दु लिल्लाहि वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि (ﷺ)' इब्ने उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया- 'यह कलमा तो मैं भी कहता हूं लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें छींक के बाद यूं सिखलाया है, 'अल्हम्दु लिल्लाहि अला कुल्लिहाल' यानी हर हाल में अल्लाह का शुक्र है। (लिहाज़ा जो सुन्नत का तरीक़ा है उसी को अपनाओ) (तिर्मिज़ी- 2738)

02. एक शख़्स इमाम मलिक रह. के पास आया और मालूम किया मैं एहराम कहां से बांधू? मालिक (रह.) ने फ़र्माया- जुल्हुलैफ़ा से। उसने कहा मैं चाहता हूं कि क़ब्रे नबी (ﷺ) से एहराम बांधू। इस पर आपने फ़र्माया- ऐसा न करना। मैं तुझ पर फ़ित्ने से डरता हूं। कहा कि- इसमें फ़ित्ने की कौनसी बात है? कि मैने कुछ मील पहले ऐहराम बांधने का इरादा किया है। (इस पर) मालिक (रह.) ने फ़र्माया- इससे बढ़कर और कौनसा फ़ित्ना हो सकता है कि तुम यह समझो कि तुमने ऐसी फ़ज़ीलत हासिल कर ली जिससे रसूल (ﷺ) क़ासिर रहे। क्या तुमने अल्लाह का कलाम नहीं सुना कि- 'उन लोगों को डरना चाहिए जो रसूल (ﷺ) का हुक्म नहीं मानते, कहीं फ़ित्ने में मुब्तला न हो जायें या कोई दर्दनाक अज़ाब उनको आ घेरे।' (नूर–63)
(अल ऐतेसाम–इमाम शातवी; जिल्द 1 पेज 74 व बहवाला मक़ामे हदीस और अहले सुन्नत)

इस आसार पर ग़ौर करने से हमें कुछ बातों का पता

चलता है, जैसे :

01. अल्लाह तआला ने जहां अहकामात बयान किये हैं वहीं उन अहकामात पर अमल करने का तरीक़ा बतलाया है। लोगों को अपनी मर्ज़ी पर नहीं छोड़ा है, बल्कि नबी (ﷺ) के बारे में फ़र्माया : **'यक़ीनन तुम्हारे लिये रसूल (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन है नमूना है।'** (अहज़ाब : 21)

और हमें रसूल (ﷺ) के तरीक़-ए-ज़िन्दगी को अपनाने हुक्म देते हुए फ़र्माया : **'जो रसूल (ﷺ) तुम्हें दे उसे ले लो और जिससे रोक दे, उससे रुक जाओ।'** (हश्र : 7)

02. जो चीज़ (बात) किताब व सुन्नत से साबित हो उसको तक़्वा समझकर छोड़ देना गुमराही है। मसलन निकाह जो क़ुर्आन व सुन्नत से साबित है अगर कोई तक़्वा समझते हुए निकाह न करे तो वह गुमराह है। (बुख़ारी : 1401)

03. बिदअते इज़ाफ़ी भी गुमराही है।

बिदअते इज़ाफ़ी उस बिदअत को कहते हैं जो अमल के ऐतबार से साबित हो लेकिन कैफ़ियत के ऐतबार से साबित न हो। जैसे कि कूफ़ा की मस्जिद में इज्तेमाई तौर पर जिक्र व औराद करने वालों को इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने ऐसा करने से मना किया ओर उन्हें बिदअती कहा। (दारमी-208)

मुख़्तार अहमद नदवी लिखते हैं कि :

'इल्मे हदीस से बेख़बरी और किताब व सुन्नत पर अमल और तहक़ीक़ से दूरी का नतीजा यह हुआ कि जईफ़, मुन्कर और मौज़ूअ अहादीस ने मुस्लिम मुआशरे में रिवाजे आम हासिल कर लिया और उनके ज़रिये बिदअत को शरई हैसियत हासिल हो गई।' यहां तक कि औलिया अल्लाह और सालिहीन के बारे में अक़ीदत के गुलू ने शिर्के जली (खुले शिर्क) तक को जाइज़ क़रार दे दिया।

लोग औलिया व सालिहीन की क़ब्रों पर सज्दा करने लगे, उनकी नज़र मानने लगे, उनसे फ़रियाद करने लगे, उनको अल्लाह का कुर्ब हासिल करने का ज़रिया समझने लगे। फिर तअवीज़ गण्डों का दौर शुरू हुआ, फ़ाल-निकलने लगी और रूहों की हाज़िरी पर यक़ीन किया जाने लगा। इन बिदआत के रिवाज ने मुसलमानों में 'सूफ़िया' के एक ख़ास तबक़े को जन्म दिया, जो (बाद में) मुसलमानों में मुस्तक़िल मज़हब बन गया।

फिर पीरी-मुरीदी का धन्धा शुरू हुआ। बैत, ख़िलाफ़त और मरातिब क़ायम हुए और शजरा पढ़ा जाने लगा।

मुराक़ेबा, चिल्लाकशी, कश्फुल कुबूर, मीलाद व उर्स, रक्स व हाल, वज्द व कैफ़ियत जैसी मनघड़त इस्तेलाहात गढ़ी गईं।

कुल शरीफ़, कुर्आन ख़्वानी, ख़त्मे ख़्वाजगान, क़साइद व ज़िक्रे-करामात, वजाइफ़ व आराद वग़ैरह ने ज़िक्रे इलाही और तिलावते कुर्आने पाक की अहमियत ख़त्म कर दी। इस तरह बिदआत के रिवाजे आम ने इस्लाम का एक नया मनघड़त एडीशन तैयार कर लिया जो अल्लाह के भेजे हुए दीन के मुकाबले में एक मुस्तक़िल दीन की तरह माना (और अ़मल किया) जाने लगा।

इस बिदई दीन और कुबूरी शरीअ़त ने इस्लाम की किसी भी छोटी-बड़ी चीज़ को नहीं छोड़ा। तौहीद, रिसालत, तवस्सुल और इबादत की हर छोटी-बड़ी शक्ल हत्ताकि वुज़ू नवाफ़िल, अज़ान, नमाज़, जनाज़ा, ताज़ियत, ज़ियारते कुबूर, ज़कात, रोज़ा और हज्ज गरज़ तमाम अहकाम व इबादत में मनमानी ईजाद व मिलावट करके उसे अपने जैसा बना डाला। इस तरह बिदअ़त के यलगार ने सारे दीन की शक्ल व सूरत बदल डाली। इससे ज्यादा अफ़सोसनाक बात यह है कि इस्लाम की इस बिगड़ी हुई शक्ल व सूरत को संवारने के लिये जो बेचैनी व कोशिशे (अवाम और उलेमा हजरात में) होनी चाहिए वह नहीं पाई जाती। (बिदआत और उनका शरई पोस्टमार्टम सफ़ा 14–15)

शेख़ अहमद बिन हजर लिखते हैं कि :

इन बिदअ़तों के मामले में जिनमें से अक्सर बिदआत ख़ालिस मुश्रिकाना है, उलेमा के तीन गिरोह है :

01. एक गिरोह इन बिदआत की ताईद करता है और लोगों को उनकी तरफ़ दअ़वत देता है। इस दलील की बुनियाद पर कि ये 'बिदअ़ते हस्ना' है। यानी बिदअ़त तो है मगर अच्छी चीज़े हैं।

02. दूसरा गिरोह हक़ीक़त से वाक़िफ़ है और जानता है कि जिन बिदआत पर लोग कारबन्द है, वह बातिल और गुमराही है लेकिन यह गिरोह अवाम का साथ देता है। उसका सबब या तो लालच होता है या ख़ौफ़ और बुज़दिली।

03. तीसरा गिरोह इन बिदआत पर नकीर करता है और लोगों को उन्हें छोड़ने की दअ़वत देता है। तौहीद और सुन्नते रसूल (ﷺ) पर चलने की तरफ़ रहबरी करता है लेकिन उनकी तादाद पहले ज़िक्र किये दोनों गिरोह के उलेमा के मुक़ाबले कम है। (बिदअ़त और उनका शरई पोस्टमार्टम सफ़ा 20-21)

अल्लाह तआला का इर्शाद है :

हम तुम्हें बतलायें वह लोग जो अमलों के लिहाज़ से बड़े नुक्सान में हैं। यह वह लोग है जिनकी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में बर्बाद हो गई और वो समझे हुए है कि अच्छे काम रहे है। (सूरह क़हफ़ : 103-104)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया- 'जिसने मेरी सुन्नत के साथ दलील पकड़ी मेरी उम्मत के बिगड़ने के वक़्त, उसके लिये सौ शहीद का सवाब है।' (मिश्कात-166, बैहक़ी किताब अल जुहद इब्ने अब्बास)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है कि वह हम सभी को बिदआत पर अमल करने से बचाये और सुन्नते रसूल (ﷺ) के मक़ाम को समझने और उस पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माये। (आमीन या रब्बल आलमीन!)

हमारी दअवत यह है कि :

01. नबी (ﷺ) ने दीन के मामले में जो काम सारी ज़िन्दगी में नहीं किया। वह काम अपनी मर्ज़ी से करके अल्लाह के रसूल (ﷺ) से आगे बढ़ने की जसारत न कीजिये क्योंकि इर्शादे बारी तआला है, 'ऐ लोगों जो ईमान लाये हो! अल्लाह से और उसके रसूल (ﷺ) से आगे न बढ़ो।' (हुजरात : 1)

02. रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उम्मत को जिस बात का हुक्म दिया है या जिसे खुद किया है या जिसे करने की इज़ाज़त दी है, उसे उसी तरह से कीजिये और अपनी चाहत को दीन में दख़ल न दीजिये। इर्शादे बारी तआला है, जो कुछ रसूल (ﷺ) तुम्हें दे उसे ले लो और जिस चीज़ (बात) से मना करें उससे रुक जाओ। (हश्र : 7)

03. नबी (ﷺ) की इताअत के मुक़ाबले में किसी दूसरे की इताअत करके अपने आमाल को बर्बाद न कीजिए। अल्लाह तआला का इर्शाद है, ऐ लोगों! जो ईमान लाये हो! अल्लाह की इताअत करो और (उसको) रसूल इताअत करो और (इनके मुक़ाबले में किसी और की इताअत करके) अपने आमाल बर्बाद न करो। (मुहम्मद : 33)

जो हजरात हमारी इस दअवत से सहमत हो हम उनसे तआव्वुन की दरख़्वास्त करते हैं। हमारा मक़सदे हक़ीक़ी अल्लाह की खुशनुबी, उसके अहकाम की बजा आवरी और अल्लाह के हक़ीक़ी दीन को अपनी ताक़त भर उसके बन्दों तक पहुंचाना है।

♻बिदअत से दूरी ही कामयाबी है
(भाग-1)
▼▼▼▼▼▼
✔ बिदअत का क्या अर्थ है और उसका हुक्म
▼▼▼
☑बिदअत काअर्थ किसी वस्तु का सर्व प्रथम अविष्कार अथवा नवाचार या प्रथम बार किसी नई वस्तु का बनाना है।

बिदअत दो प्रकार के होती है :-

1.बिदअत ,दुनिया के रहन- सहन क़े बारे में में:

दुनिया में अगर किसी कार्य या वस्तु का प्रयोग किया जाता है- परन्तु इसमें किसी सवाब की आशा/इच्छा नहीं की जाती है तथा जब तक कि उसका इस्लाम की किसी मूल (बेसिक) आस्था से टकराव न हो तो ऐसे में नई वस्तु/कार्य का प्रचलन जाइज़ है। जैसे - कि आज के युग में दुनिया ने नई नई चीज़ें अविष्कार की हैं, परिवहन साधन,मोबाइल,रेफ्रिजरेटर,पंखे-कुलर, इत्यादि का प्रयोग।

इसी तरह मस्जिद को पक्का सीमेंटेड करवाना या उसपर मार्बल लगवाना ,कालीन बिछवाना,मीनार तामीर करवाना,पंखे ,ट्यूब लाइट,ए.सी. आदि के प्रयोग से चुँकि किसी व्यक्ति की इबादत के सवाब में किसी कमी या बढ़ोतरी की गुंजाईश नहीं रहती है इसलिए यह दीन बिदअत नहीं कहलाएगी।

मिसाल के तोर पर किसी साधारण कमरेनुमा मस्जिद में जहा ऊपर उल्लेखित सुविधाए न हो के अंदर अथवा मस्जिद न होने की स्थिति में कोई जमात खुले आसमान के निचे कच्चे फर्श पर नमाज अदा करे तो उन व्यक्तियो को भी नमाज का उतना ही सवाब प्राप्त होगा जितना की सुविधायुक्त मस्जिद में प्राप्त होता,इसलिए इन दुनिवायी सविधाओं को दीन में बिदअत नहीं माना जा सकता।

2.बिदअत , दीन के बारे में :

दीन में बिदअत की परिभाषा:
शरीयत ए इस्लाम में प्रत्येक वह नया कर्म जिस के करने पर अल्लाह से सवाब (पुण्य) की आशा रखा जाए और वह कर्म नबी करीम ﷺ ने नहीं किया और न ही सहाबा (रज़ि0) ने किया हो तो वह बिदअत में शुमार होगा।

इबादत तौक़ीफी है मतलब कि जिन इबादतों के करने का आदेश अल्लाह ने दिया हो या नबी करीम ﷺ की सुन्नत से प्रमाणित हो तो उन्हीं इबादतों को किया जाएगा। अपनी इच्छा या विद्वानों के इच्छानुसार इबादतें अल्लाह के पास अस्वीकृत है और इन्हीं इबादतों को बिदअत और पथभ्रष्टता में शुमार किया जाता है।

⊙"हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत हैं के नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया – जिसने दीन मे कोई ऐसा काम किया जिसकी बुनियाद शरीअत मे नही वह मर्दुद (rejected) है। "
📚बुखारी 2697

⊙"हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि0 से रिवायत है कि - नबी ﷺ ने फ़रमाया याद रखो बेह्तरीन बात अल्लाह कि किताब है और बेह्तरीन हिदायत मुहम्मद ﷺ कि हिदायत है और बद्तरीन काम दीन मे नया काम ईजाद करना है और हर बिदअत गुमराही हैं"
📚इब्नेमाजा :45

दीन-ए-इस्लाम में बिदअत को पसंद करने वालो ने अपने गैर मसनून और बिदई कामो (बातो) को दीन की सनद दिलाने के लिए बिदअत को बिदअते हस्ना और बिदअते सय्या में बाट रखा है।हालांकि की रसूलुल्लाह ﷺ दीन के अंतर्गत आने वाली तमाम बिदअत को गुमराही करार दिया है।

अपनी बातिल बात को सिद्ध करने के लिए हदीस गढ़ने वाले और रसूलुल्लाह ﷺ का नाम ले ले कर नए नए त्यौहार और नए नए रिवाज दीन ए इस्लाम में शुरू करने वाले व पहले से जारी रिवाजो जिनकी शरीयत में कोई हैसियत नहीं है की पैरवी करने वाले हजरात जरा इधर भी अपनी नजरे इनायत करे :-
⊙"हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत हैं के अल्लाह के नबी ﷺ ने फ़रमाया – जिसने जानबूझ कर झूठ मेरी तरफ़ मंसूब किया वह अपना ठिकाना जहन्नम मे बना ले"
📚बुखारी :107
ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ

♻बिदअत से दूरी ही कामयाबी है
(भाग-2)

बिदअत से दूरी ही कामयाबी है
(भाग-2)
▼▼▼

✓ इबादत तौक़ीफी है मतलब कि जिन इबादतों के करने का आदेश अल्लाह ने दिया हो या नबी ﷺ की सुन्नत से प्रमाणित (साबित) हो तो उन्हीं इबादतों को किया जाएगा। अपनी इच्छा या विद्वानों के इच्छानुसार इबादतें अल्लाह के पास अस्वीकृत है और इन्हीं इबादतों को बिदअत और पथभ्रष्टता(गलत रास्ता) में शुमार किया जाता है।

▼▼

"हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि0 से रिवायत है कि - नबी ﷺ ने फ़रमाया याद रखो बेह्तरीन बात अल्लाह कि किताब है और बेह्तरीन हिदायत मुहम्मद ﷺ कि हिदायत है और बद्तरीन काम दीन मे नया काम ईजाद करना है और हर बिदअत गुमराही हैं"
📚इब्नेमाजा :45

"हजरत अली रजि. से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फरमाया- "अल्लाह ने लानत की है उस शख्स पर जो गेरुल्लाह के नाम पर जानवर ज़िब्ह करे,जो जमीन की हदें तब्दील करे,जो अपने वालिद पर लानत करे और जो बिदअती को पनाह (समायोजित करे) दे।"
📚सहीह मुस्लिम

" जरीर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया "जिसने मेरी सुन्नत में से कोई एक मुर्दा सुन्नत को जिन्दा किया और लोगो ने उस पर अमल किया तो सुन्नत जिन्दा करने वाले को भी उतना ही सवाब मिलेगा जितना उस सुन्नत पर अमल करने वाले तमाम लोगो को मिलेगा जबकि लोगो के अपने सवाब में से कोई कमी नहीं की जायेगी। और जिसने कोई बिदअत जारी की और फिर उस पर लोगो ने अमल किया तो बिदअत जारी करने वाले पर उन तमाम लोगो का गुनाह होगा जो उस बिदअत पर अमल करेंगे जबकि बिदअत पर अमल करने वाले लोगो के अपने गुनाहो की सजा में से कोई चीज कम नहीं होगी।"
📚इब्ने माजा-203,मुस्लिम,तिर्मजी

"हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत हैं के नबी ﷺ ने फ़रमाया – जिसने दीन मे कोई ऐसा काम किया जिसकी बुनियाद शरीअत मे नही वह मर्दुद (rejected) है| "
📚बुखारी 2697

दीन-ए-इस्लाम में बिदअत को पसंद करने वालो ने अपने गैर मसनून और बिदई कामो (बातो) को दीन की सनद दिलाने के लिए बिदअत को बिदअते हस्ना और बिदअते सय्या में बाट रखा है।हालांकि की रसूलुल्लाह ﷺ दीन के अंतर्गत आने वाली तमाम बिदअत को गुमराही करार दिया है।
(....हर बिदअत गुमराही हैं.......~इब्ने माजा-045)

एक गिरोह इन बिदआत की ताईद करता है और लोगो को उनकी तरफ दावत देता है।इस दलील की बुनियाद पर की ये "बिदअत हसना" है यानी बिदअत तो है मगर अच्छी चीज है।
मगर हकीकत यह है की- बिदअते हसना के चोर दरवाजे ने दीन (इस्लाम) में बिदअत को फ़ैलाने और रिवाज देने में सबसे अहम रोल (किरदार) अदा किया है।
मसनून इबादतों के मुकाबले में गैर मसनून और मन घडत इबादतों ने जगह लेकर एक बिलकुल नए दीन की इमारते खड़ी कर दी।

ये बिदअत है:- तअविज गण्डा,फाल निकालना,कुल शरीफ,दसवा शरीफ,चालीसवाँ शरीफ,बरसी शरीफ,ग्यारवीं शरीफ,उर्स शरीफ,मिलाद शरीफ,नियाज शरीफ,चिल्ला कशी,कशफल कुबुर,चिरागा,गेरुल्लाह को सज्दा व चढ़ावा और उनसे दुआ,कब्रो पर चादर चढ़ाना,अरफा,शबे बरात,रजब के कुंडे,कव्वाली,गंजल अर्श,दरुदे ताज, ताज,दरुदे नारिया,दरुदे माही,दरुदे तन्जिना,दरुदे अकबर,कजा उमरी,अंगुठे चुमना,कुरानख्वानी,खाने पर फातिहा,खत्म ख्वाजगान,तकलीद,मुहर्रम के ताजिए वगेरह वगेरह जैसे गैर मसनून बिदई (बिदअत) अफवाल को इबादत का दर्जा देकर तिलावते कुरआन,रोजा,नमाज,हज्ज,जकात,तस्बीह व तहलील और ज़िक्र इलाही जैसी इबादतों को सिरे से ताक पर रख दिया गया और अगर कही इन इबादात का तसुव्वर बाकी रह भी गया है तो बिदआत के जरिये उनकी हकीकी शक्ल व सूरत बिगाड़ दी गयी है।
आप इस हकीकत को भी जान लें कि बिदअतियों ने अपने ज्यदातर अक़ाइद और आमाल की बुनियाद जईफ और मौजूअ (मनघडत) रिवायत पर रखी है।
और यह भी कि अक्सर बिदआत शिरकिया अक़ाइद और नज़रियात पर मबनी है यही वजह है कि बिदअत व शिर्क का आपस में चोलीदामन का साथ है।

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि "

۞"आप (ﷺ.) कह दो कि क्या हम तुम्हे बता दें की आमाल की हैसियत से कौन लोग घाटे में है

इलाही जैसी इबादतों को सिरे से ताक पर रख दिया गया और अगर कही इन इबादात का तसुव्वर बाकी रह भी गया है तो बिदआत के जरिये उनकी हकीकी शक्ल व सूरत बिगाड़ दी गयी है।
आप इस हकीकत को भी जान लें कि बिदअतियों ने अपने ज्यदातर अक़ाइद और आमाल की बुनियाद जईफ और मौज़ूअ (मनघडत) रिवायत पर रखी है।
और यह भी कि अक्सर बिदआत शिरकिया अक़ाइद और नज़रियात पर मबनी है यही वजह है कि बिदअत व शिर्क का आपस में चोलीदामन का साथ है।

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि "

۞"आप (ﷺ.) कह दो कि क्या हम तुम्हे बता दें की आमाल की हैसियत से कौन लोग घाटे में है,
(ये) वह लोग (हैं) जिन की दुनियावी ज़िन्दगी की राई (कोशिश सब) बेकार हो गई और वह उस ख़ाम ख्याल में हैं कि वह यक़ीनन अच्छे-अच्छे काम कर रहे है"
Al-Kahf (18:103-04)
〰〰〰〰〰〰〰〰〰

✔हमारी दावत यह है कि

☑अल्लाह कुरआन में फरमाता है

۞"ऐ ईमानदारों अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के सामने किसी बात में आगे न बढ़ जाया करो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है"
Al-Hujuraat (49:1)

۞"..................हा जो तुमको रसूल (ﷺ) दें दें वह ले लिया करो और जिससे मना करें उससे बाज़ रहो और ख़ुदा से डरते रहो बेशक ख़ुदा सख्त अज़ाब देने वाला है"
Al-Hashr (59:7)

۞और तुम सब के सब (मिलकर) अल्लाह की रस्सी मज़बूती से थामे रहो और आपस में (एक दूसरे) के फूट न डालो ...."
Aal-i-Imraan(3:103)
ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ